प्रातःक्लास 15.4.68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बच्चों प्रति। सिर्फ़ रूह कहेंगे तो जीव निकल जाता; इसलिए रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप समझाते हैं। अपन को आत्मा समझना है। हम आत्माओं को बाप से यह नॉलेज मिलती है। बच्चों को देही अभिमानी हो रहना है। बाप आये ही हैं बच्चों को ले जाने लिए। भल सतयुग में तुम आत्माभिमानी रहते हो; परन्तु परमात्मा अभिमानी नहीं। यहां तुम आत्मा अभिमानी भी बनते हो तो परमात्मा अभिमानी (अर्थात् हम परमात्मा बाप के संतान) भी बनते हो। यहां और वहां में बहुत फ़र्क रहता है। यहां तो है पढ़ाई। वहां पढ़ाई की कोई बात नहीं। यहां हरेक अपन को आत्मा समझते हो। और बाबा हमको पढ़ाते हैं इस निश्चय में रह कर सुनेंगे तो धारणा भी अच्छी होगी। आत्मा अभिमानी बनते जावेंगे। इस अवस्था में टिकने की मन्ज़िल बहुत बड़ी है। घड़ी–2 भूल जाते हैं। बाप तो कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहकर अपन को आत्मा समझो। मन्ज़िल बहुत बड़ी है। सुनने में तो बहुत सहज लगती है। बच्चों को यही अनुभव सुनाना है कि ... कैसे अपन को आत्मा समझ दूसरे को भी आत्मा समझ बात करते हैं। इसमें मेहनत चाहिए। बाप कहते हैं मैं भल इस शरीर में हूँ; परन्तु मेरी यह असल की प्रैक्टिस है ही। मैं बच्चों को आत्मा ही समझता हूँ। आत्माओं को पढ़ाता हूँ। भक्तिमार्ग में भी आत्मा पार्ट बजाती है। पार्ट बजाते–2 पतित बनी है। अभी फिर आत्मा को पवित्र बनना है। सो जब तक बाप को परमात्मा समझकर याद नहीं करेंगे तो पवित्र कैसे बनेंगे? इस पर बच्चों को बहुत अंतर्मुख हो याद का अभ्यास सीखना है। नॉलेज तो बहुत सहज है। बाकी यह निश्चय पक्का रहे हम आत्मा पढ़ती हैं। बाबा हमको पढ़ाते हैं। तो धारणा भी होगी और कोई भी विकर्म न होगा। ऐसे नहीं कि इस समय तुमसे कोई विकर्म नहीं होते हैं। विकर्माजीत तो अंत में होंगे। भाई–2 की दृष्टि बहुत मीठी रहती है। इसमें कब देहअभिमान नहीं आवेगा। बच्चे समझते हैं बाप की नॉलेज बहुत ही डीप है। अगर ऊँच ते ऊँच बनना है तो यह प्रैक्टिस अच्छी रीत करनी पड़े। इस पर गौर करना है। अंतर्मुख होने लिए एकान्त भी चाहिए। यहां जैसे एकान्त। घर में वा धोरी–धंधे में मिल न सके। यहां तुम यह प्रैक्टिस बहुत अच्छी रीत कर सकते हो। आत्मा को आत्मा को ही देखना पड़े। अपन को भी आत्मा समझना है। यह प्रैक्टिस यहां करने से फिर आदत पड़ जावेगी। अपने पास इसका चार्ट रखना चाहिए कहां तक आत्माभिमानी बुद्धि बने हैं। आत्मा को ही हम सुनाते हैं। उनसे ही बात–चीत करते है।। यह प्रैक्टिस बहुत अच्छी चाहिए। बच्चे समझते हैं यह बात तो बरोबर ठीक है। देह अभिमान निकल जाये और हम आत्माभिमानी बन जावें धारण कर और कराते जावें। कोशिश कर अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना यह चार्ट बहुत ही डीप है। बड़े–2 महारथी भी समझते होंगे बाबा दिन–प्रतिदिन जो सबजेक्ट्स देते हैं विचार–सागर–मंथन करने लिए यह तो बहुत–2 बड़ी प्वाइन्ट्स है। फिर कभी भी मुख से उल्टा–सुल्टा अक्षर नहीं निकलेंगे। भाईयों–2 का आपस में बहुत ही प्यार हो जावेगा।बाप की महिमा को तो जानते ही हो। कृष्ण की महिमा अलग है। उनको कहते हैं सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण.....;परन्तु कृष्ण के पास यह सफीयत भी कहां से आई? भल उनकी महिमा भी अलग है; परन्तु सर्वगुण सम्पन्न बनता तो ज्ञान सागर से ही है ना। तो अपनी जांच बहुत रखनी पड़ती है। कदम–2 पर पूरा पोतामेल निकालना है। व्यापारी लोग सारे दिन की मु(रा)दी रात को सम्भालते हैं। तुम्हारा भी व्यापार है ना। रात को सोने समय अपनी जांच करनी है। हमने भाई–2 समझकर बात–चीत की। कोई को भाई न समझ दुःख तो नहीं दिया; क्योंकि यह तो जानते हो हम सभी भाई क्षीर सागर तरफ जाते हैं। यह तो है विषय सागर। तुम अभी न रावण राज्य में हो, न राम रामराज्य में हो। तुम बीच में हो। तो अपन को आत्मा समझ बाप को (याद) करने का पुरुषार्थ करना है। देखना है कहां तक हमारी वह अवस्था रहती है। भाई–2 की दृष्टि रहे। सभी भाई–2 हैं। इस शरीर से पार्ट बजाते हैं। आत्मा जानती है यह शरीर विनाशी है। आत्मा अविनाशी है। हमने 84 जन्म का पार्ट बजाया। अभी फिर बाप आये हैं। कहते हैं मामेकं याद करो। अपन को आत्मा समझो। आत्मा समझने से भाई–2 हो जाते हैं। बाप के सिवाय

15.4.68

और कोई का पार्ट नहीं। प्ररेणा आदि की तो बात ही नहीं। जैसे टीचर बैठ समझाते हैं वैसे ही बाप बच्चों को समझाते हैं। यह विचार की बात है ना। इसमें टाइम देना पड़ता है। बाप ने धंधा आदि करने लिए तो कह दिया; लेकिन याद की यात्रा भी ज़रूरी है। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना है। इसके लिए टाइम चाहिए। टाइम निकालना भी चाहिए। सर्विस भी सभी को(की) भिन्न है। कोई टाइम निकाल सकते हैं। जैसे जगदीश बहुत टाइम निकाल सकते हैं। बहुत ही प्रैक्टिस कर सकते हैं। मैंगज़ीन में भी शिक्षा दे सकते हैं। इसमें भी ऐसी युक्ति से लिखना चाहिए कि यहां हमको बाप का ऐसे याद करना होता है। एक/दो को भाई–2 समझना होता है। बाप आकर सभी आत्माओं को पढ़ाते हैं। आत्मा में दैवी गुणों के संस्कार अभी भरनी है। मनुष्य पूछते हैं भारत का प्राचीन योग क्या है? तुम समझ सकते हो; परन्तु तुम अभी बहुत थोड़े हो। तुम्हारा नाम निकला नहीं है। ईश्वर योग सिखाते हैं तो ज़रूर उनके बच्चे भी होंगे। वह भी जानते होंगे। यह किसको भी पता नहीं है कि निराकार बाप कैसे आकर पढ़ाते हैं। वह खुद ही समझाते हैं। मैं कल्प–2 संगमयुग पर आता हूँ। आकर सुनाता हूँ कि मैं ऐसे आता हूँ। किसके तन में आता हूँ। इसमें भी मूँझने की कोई बात नहीं। यह बना बनाया ड्रामा है। एक में ही आते हैं। राइट बात तो एक ही है। प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा स्थापना। वही मुरब्बी बच्चे पहले–2 बनते हैं। आदि सनातन देवी–देवता धर्म स्थापन करते हैं। फिर वही पहले नम्बर में आते हैं। इस चित्र पर समझानी बहुत अच्छी है। ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा कैसे बनते हैं, यह और कोई समझ न सके। समझाने की भी युक्ति है ना। अभी तुम समझते हो बाप कैसे आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना करते आते हैं। कैसे चक्र फिरता है। इन बातों को और कोई नहीं जान सकते हैं। तो बाप कहते हैं ऐसी युक्ति से समझाओ, लिखो। यर्थात् योग कौन सिखला सकते हैं। यह मनुष्यों को मालूम पड़ जाये तो तुम्हारे पास ढेर आ जावेंगे। इतने बड़े–2 आश्रम जो बने हैं वह सभी हिलने ल(ग) पड़ेंगे। पिछाड़ी को तो होना ही है। फिर वण्डर खावेंगे। इतने सभी जो संस्थाएं हैं वह सभी भक्तिमार्ग के हैं। ज्ञानमार्ग के एक भी नहीं। तब ही तुम्हारी विजय होगी। यह भी तुम जानते हो हर 5000 वर्ष बाद बाप आते हैं। बाप द्वारा तुम सीखते और फिर सिखाते रहते हो। कैसे, किसको सम्मुख समझावें, कैसे लिखत में समझावें। कल्प–2 ऐसे ही चलते–2 पिछाड़ी को ऐसी युक्ति निकलती है जो बहुतों को पता पड़ जाता है। सिवाय बाप के (धर्म) स्थापना कोई कर न सके। तुम समझते हो उस तरफ रावण और राम। रावण पर तुम जीत पहनते हो। वह सभी हैं रावण के सम्प्रदाय। तुम ईश्वरीय सम्प्रदाय के कितने थोड़े हो। भक्तिमार्ग का कितना प्रचार है। कितना शो है। जहां पानी है वहां मेले लगते हैं। कितना खर्चा होता है। कितने डूबते हैं। मरते हैं। यहां तो वह बात नहीं। फिर भी बाप कहते हैं आश्चर्यवत मेरे को पहचानन्ति, सुनन्ति, सुनावन्ति, पवित्र रहन्ति फिर भी अहो माया तेरे द्वारा हार खावन्ति। कल्प–2 ऐसे होता है। हार खावन्ति भी होते हैं। माया के साथ युद्ध है ना। महाभारत का भी कितना प्रभाव है। यह सभी है भक्ति। भक्ति को तो चलना ही है। आधा कल्प तो तुम प्रारब्ध भोगते हो। फिर आधा बाद रावण राज्य से भक्तिमार्ग शुरू होता है। उनकी निशानियां भी कायम हैं। विकार में जाते हैं फिर देवताएं तो कहेंगे नहीं। कैसे वह विकारी बनते हैं दुनियां में यह भी कोई नहीं जानते। शास्त्रों में भी लिख दिया है देवताएं वाममार्ग में गये। कब गये यह नहीं समझते हैं। यह सभी बातें अच्छी रीत समझने–समझाने की हैं। वह भी तब समझे जबकि पहले निश्चय बुद्धि हो। निश्चय बुद्धि वाले को झट कशिश होगी। तुमको कहते हैं ऐसे बाप से तो हमको मिलाओ; परन्तु देखो घर जाते हैं वह नशा रहता है। निश्चय बुद्धि रहते हैं। भल याद सताती रहे। चिट्ठी लिखते रहे। आप हमारे बाप हो। आपसे हमको इतना ऊँच वर्सा मिलता है तो हम क्यों न आप से मिलें? आप से मिलने बिगर हम रह नहीं सकते हैं। सगाई के बाद मिलना होता है ना। कुमारी की सगाई हुई फिर अन्दर तरफती रहती है। तुम भी समझते हो

15.4.68

वह हमारा बेहद का बाप है। टीचर, पति, चाचा, मामा, काका आदि सभी सम्बन्ध एक से ही हैं। और सभी से तो दुःख ही मिलता है। उनके एवज़ में बाप सभी सुख देते हैं। भल वहां करके फैमिली कम होती है; परन्तु सभी सुख देने वाले ही होते हैं। तुम सुख के सम्बन्ध में बांध रहे हो। पहले दुःख के बन्धन में थे। अभी (यह) है पुरुषोत्तम बनने का पुरुषोत्तम संगमयुग ही अलग है। मनुष्यों की बुद्धि में आधा कल्प से शास्त्रों आदि की बातें जो बैठी हुई हैं वह निकलती ही नहीं हैं। घड़ी–2 भूल जाते हैं। मूल बात है अपन को आत्मा (समझ) बाप को बहुत ही प्यार से याद करना। याद से ही खुशी का पारा चढ़ेगा। भक्ति तो करते आये हैं। हमने ही सबसे जास्ती भक्ति की है। तरफ्ते–2 धक्के खाते मिला है। अभी बाप आये ही हैं वापस ले जाने लिए तो ज़रूर पवित्र बनना है। दैवीगुण भी धारण करनी है। सारे दिन का पोतामेल रात को निकालना है। आज सारे दिन में कितने को बाप का परिचय दिया। बाप के परिचय देने बिगर सुख नहीं आता। जैसे कि तरफन लग जाती है। विघ्न भी बहुत पड़ते हैं। कितनी मारें खातीं हैं। और कोई भी सतयुग में पवित्रता की बात ही नहीं। यहां तुम पवित्र बनते हो तो कितने विघ्न डालते हैं। पावन बनकर वापस जाना ही है। यह भी तुम जानते हो संस्कार आत्मा ले जाती है। कहते हैं जो युद्ध के मैदान में मरेंगे वह स्वर्ग में जावेंगे; इसलिए बहुत ही खुशी से लड़ाई में जाते हैं। अभी स्वर्ग है कहां? बाकी हां, संस्कार ले जाते हैं तो फिर शरीर छोड़ लड़ाई के मैदान में ही चले जाते हैं। तुम्हारे पास देखो कमाण्डर, मेजर, सिपाही आदि कहां–2 आते हैं। सचमुच स्वर्ग में कैसे जावेंगे यह कोई भी समझते नहीं। युद्ध के मैदान में तो उनको अपने मित्र–सम्बन्धी आदि ही याद आते रहेंगे। अभी बाप कहते हैं कि अभी सभी को वापस जाना है। मुझे याद करो, अपन को आत्मा भाई समझो। सभी आत्माओं को एक बाप से ही वर्सा मिलता है। जो जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना ऊँच पद पावेंगे। भाई–2 की दृष्टि पक्की रखनी है। वह लोग भी कहते हैं हम सभी भाई–2 हैं; परन्तु इसका अर्थ कोई भी समझते नहीं हैं। तुम अभी कितने समझदार बनते हो। वह है बेसमझ। भाई–2 का अर्थ नहीं समझते हैं। बाप को नहीं जानते। इनको ठिक्कर–भित्तर, कुत्ते–बिल्ले सबमें ठोक दिया है; इसलिए बाप ने कहा है गीता में यदा यदा .....इसका भी अर्थ उनसे तुम पूछो बिल्कुल ही नहीं जानते। भगवान को (डिफेम) करना इसकी तो बहुत ही सज़ा मिलनी चाहिए। मनुष्य समझते हैं हम नि(ष)काम सेवा करते हैं। हमको फल की इच्छा नहीं है; परन्तु फल तो ऑटोमेटकली (मिल)ता ही है। निष्काम सेवा तो एक ही बाप करते हैं। बच्चे भी समझते हैं हम बाप की कितनी ग्लानी करते आये हैं। बाप की भी ग्लानी, देवताओं की भी ग्लानी कर दी है। ऐसी–2 ग्लानी की शास्त्र इकट्ठी करनी चाहिए। एक मैगज़ीन भी जो कृष्ण को चक्र दिखाया है। सभी को मारते रहते हैं। जैसे शंकराचार्य ने कहा है नारी नर्क का द्वार है। ऐसे–2 किताब हाथ रखनी चाहिए समझाने लिए। यहां तुम डबल अहिंसक हो। न काम कटारी चलाना, न क्रोध करना। क्रोध भी विकार है। लिखते हैं बाबा हमने बहुत गस्सा किया। बाबा समझाते हैं थप्पड़ आदि न मारो। यह भी भाई है ना। इनमें भी आत्मा है आत्मा तो छोटी–बड़ी हो नहीं सकती। यह बच्चा नहीं छोटा भाई है। आत्मा के रूप में समझना है। छोटे भाई को थोड़े ही मारना चाहिए; इसलिए कृष्ण को भी दिखाते है, उनको मारा नहीं। मारना तो क्रोध की निशानी है। उनको उखड़ी से बांधा, यह किया; परन्तु ऐसी बात है नहीं। यह सभी शिक्षाएं हैं भिन्न–2 रूप में। बाकी वहां कृष्ण को क्या परवाह रखी है माखन आदि खाने की। बातें जो महिमा की दिखाई हैं सभी उल्टी। अभी तुम सुल्टी महिमा करेंगे। सर्वगुण सम्पन्न.....वह कहेंगे चोरी की, यह किया, उनको भगाया। सारी उल्टी बातें। महिमा के बदली ग्लानी कर दी है। यह भी ड्रामा में नूँध है। यह सभी समझना होता है। अभी तमोप्रधान हो गये हैं यह भी तुम बच्चे ही जानते हो। फिर बाप आकर तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाते हैं। युक्ति तो बहुत ही सहज है। पढ़ाने वाला है बेहद का बाप। तो उनकी मत पर चलना पड़े। डिफिकल्ट ते डिफिक्ल्ट यह सबजेक्ट है।

15.4.68

पद भी तुम कितना ऊँच पाते हो। अगर सहज हो तो सभी इस इम्तहान में लग जायें। तुम समझते हो इसमें बड़ी मेहनत लगती है। देहअभिमान में आने से कुछ न कुछ विकर्म बन जाता है; इसलिए छुई–मुई का दृष्टांत दिया है। बाप को याद करने से तुम खड़े रहेंगे। भूलने से कुछ न कुछ भूलें हो जावेंग(ी)। पद भी कम हो पड़ता है। शिक्षा तो सभी की दी है। जिसकी फिर बाद में गीता बैठ बनाई है। रामायण, गरुड़पुराण आदि कितने शास्त्र हैं। गरुड़ पुराण में भी रोचक बातें दिखाई हैं। तो मनुष्यों को डर रहेगा ऐसे पाप करने से ऐसे–2 बनेंगे। रावण राज्य में पाप तो होते ही हैं। कांटों से भी भेंट की जाती हैं। यह कांटों का जंगल है ना। बाप कहते हैं दृष्टि को भी बदलना है। बहुतों की दृष्टि वही रहती है। बहुत समय के (ि)हरे हुये हैं ना। अच्छे–2 स्टूडेन्ट भी किसका मुँह देखते रहेंगें। शरीर तरफ़ प्यार चला जाता है। विनाशी चीज़ से प्यार रखने से फायदा ही क्या? अविनाशी साथ प्यार रखने से वह भी अविनाशी बन जाता है। बच्चों को उठते–बैठते, चलते एक बाप को ही याद करना है। कैसे औरों को समझावें। गंगा का पानी तो पतित–पावनी है नहीं। उनमें तो नालों का गंदा कचड़ा आदि पड़ता रहता है। स्वच्छ होकर पहाड़ों से आती है फिर मलेच्छ होकर सागर में जाते हैं। जो भी नदी पहाड़ से निकलती है वह बहुत ही स्वच्छ होती है। बर्फ़ कितनी स्वच्छ होती है। एकदम साफ। गिरी जो ऊपर (से) गिरती है सबसे शुद्ध होती है। डॉक्टर लोग वह बहुत इकट्ठे करते हैं। वह है बिल्कुल शुद्ध पानी। यहां (तो) अपनी आत्मा को स्वच्छ बनाना है। पवित्र को वैष्णव कहा जाता है। आदि सनातन धर्म के वैष्णव कुल के पवित्र थे; परन्तु अभी तो पवित्र नहीं हैं। अभी तो विकारी हैं ना। उनको वैष्णव नहीं कहेंगे। वेजीटेरियन हैं। पावन नहीं, पतित हैं। भार खाने वाले को वैष्णव नहीं कहेंगे। कैसे–2 पतित मनुष्य होते हैं। तुमको तो पावन बनना है। वैष्णव कुल के तुम सतयुग में जाकर बनते हो। दूसरे कोई तो हो भी न सके। भारतवासी ही वैष्णव कुल के हैं ; परन्तु पवित्र न होने कारण उन्हों को वैष्णव नहीं कहा जाता। मूल बात है याद की। बाप को याद किया तो वर्सा ज़रूर या(द) आवेगा। जितना याद करेंगे उतना वर्सा भी मिलेगा। बाप समझाते भी बहुत सहज हैं। अलफ़ माना अल्लाह। बे माना बादशाही। बस । और कोई तकलीफ नहीं देते। तुम बेहद के बाप के पास आये हो वर्सा लेने। यह है अलौकिक बाप। इन द्वारा ही तुमको वर्सा मिलता है। तुमको याद इनको नहीं करना है। इनका फोटो रखने क(ी) भी दरकार नहीं। कोई भी देहधारी को याद नहीं करना है। सन्यासी लोग तो अपना लॉकेट आदि दे देते हैं याद करने लिए। यह तो ऐसे कहते नहीं हैं। वह बाप कहते हैं मामेकं याद करो। वर्सा तुमको एक ही बाप से मिलता है। वह बेहद का बाप कितना लवली है। बाकी तो सभी हैं दुःख देने वाले। यह एक ही बाप सभी के बदली सुख देते हैं। सभी सुख देते हैं। और कोई यह सुख दे न सके। सीढ़ी तो नीचे ही उतरते हैं। ऊपर तो कोई जाते ही नहीं हैं। तुम्हारी बुद्धि में भी अभी सारा चक्र है। यह चक्र और झाड़ , इनमें सभी धर्म वालों का आ जाता है। सीढ़ी में सभी धर्म वालों का नहीं आता है। वह सीढ़ी से इतना नहीं समझेंगे। सीढ़ी भारतवासियों की 84 जन्मों की है। उन्हों को फिर गोला और झाड़ दिखाना है। यह त्रिमूर्ति और चक्र है मुख्य। मुख्य बात भी बाप समझाते रहते हैं अपन को आत्मा समझना है। अपन को आत्मा समझने से शुद्ध प्रेम हो जावेगा। भाई–बहन समझने से भी काम नहीं चलता है। तब ही बाप कहते हैं भाई–2 समझो। इसमें है मेहनत। बाकी ज्ञान तो बहुत ही सहज है। बाप जो समझाते हैं वह फिर औरों के लिए युक्ति से लिखना है तो बुद्धि में टिक सके। जब कोई समझे तब कहेंगे यह ज्ञान तो बिल्कुल राइट है। सिर्फ़ लिटरेचर से कोई का समझना मुश्किल है। दिन–प्रतिदिन तुम्हारा नाम हो जावेगा। समझेंगे बरोबर कोई भी मनुष्य प्राचीन योग सिखाय नहीं सकते। वह लोग तो गपोड़ा मारते रहते हैं। फलाना ब्रह्म में लीन हो गया। बाप समझाते हैं वापस कोई भी जाता नहीं। सभी आते रहते हैं। सभी ड्रामा के बन्धन में बांधे हुये हैं। शंकर की बारात नहीं। शिव की बारात है। कैसे सभी जाते हैं। जैसे मक्खियों की रानी आगे जाती है सारा झुण्ड उनके पिछाड़ी जाती(ता) है। कितना मानारा होता है। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग। नमस्ते।